

**राजा रामन्ना प्रगत प्रौद्योगिकी केन्द्र
स्थापना दिवस समारोह
20 फरवरी, 2017**

प्रेस विज्ञप्ति

राजा रामन्ना प्रगत प्रौद्योगिकी केन्द्र ने दिनांक 20 फरवरी, 2017 को अपना 34 वां स्थापना दिवस मनाया। श्री ए.एस. किरण कुमार, सचिव, अंतरिक्ष विभाग, अध्यक्ष, अंतरिक्ष आयोग एवं अध्यक्ष, इसरो (ISRO) इस समारोह के मुख्य अतिथि थे। श्री पी.ए. नाईक, निदेशक, आरआरकेट ने समारोह की अध्यक्षता की। श्री एस.सी. जोशी, प्रमुख, प्रोटोन लिनेक एवं अतिचालक गुहिकाएं प्रभाग ने उपस्थित सभी का स्वागत किया। डा. एस.बी. रॉय, प्रमुख, MAASD ने धन्यवाद ज्ञापन दिया। कार्यक्रम का संचालन श्री एस.वी. नाखे, प्रमुख, लेसर प्रणाली इंजीनियरिंग प्रभाग ने किया।

श्री पी.ए. नाईक ने इस केन्द्र की वैज्ञानिक गतिविधियों की जानकारी देते हुए, गत वर्ष की उपलब्धियों पर प्रकाश डाला। उन्होंने इण्डस-1 एवं इण्डस-2 सिंक्रोट्रॉन विकिरण स्रोत के बारे में बताते हुए कहा कि इन दोनों का कार्य निष्पादन किया बहुत ही अच्छा रहा है एवं कैलेण्डर वर्ष 2016 में इस बीमलाइन का उपयोग करते हुए शोधार्थियों एवं विद्यार्थियों द्वारा कुल 639 प्रयोग निष्पादित किए गए। वर्तमान में 19 बीमलाइनें प्रचालित की जा रही हैं एवं अन्य 7 निर्माणाधीन हैं। प्रोटीन क्रिस्टलोग्राफी बीम लाइन के उपयोग से 31 नई प्रोटीन संरचनाओं के समाधान को प्रोटीन डेटा बैंक में शामिल किया गया है। उन्होंने परमाणु ऊर्जा विभाग के विविध कार्यक्रमों में आरआरकेट के योगदान के बारे में जानकारी देते हुए बताया जिसमें नाभिकीय ऊर्जा संयंत्रों की जोखिम दशाओं में लेसर कटिंग के कार्य को भी पूरा करना भी शामिल है। डा. नाईक ने आरआरकेट की भविष्य की परियोजनाओं जिसमें भारतीय स्पेलेशन न्यूट्रॉन स्रोत एवं विविध अंतर्राष्ट्रीय सहयोग के बारे में भी जानकारी दी। गुरुत्वीय तरंगों के क्षेत्र में आरआरकेट द्वारा LIGO-India परियोजना के तहत प्रारंभ किए गए एक नये सहयोग पर भी कार्य शुरू किया गया है। उन्होंने आरआरकेट की गत वर्ष की मुख्य उपलब्धियों एवं किए गए प्रयासों विशेषतौर से लेसर योज्य निर्माण, लेसर मार्कर एवं लेसर मापयंत्रण के बार में भी बताया। डा. नाईक ने अंतरिक्ष कार्यक्रमों में आरआरकेट की भूमिका की भी संक्षिप्त चर्चा की जिसमें चंद्रयान-1 एवं मंगलयान के विशेष कैलिब्रेशन का कार्य शामिल है। आरआरकेट के कार्मिकों से भरे-पूरे सभागार में अपने संबोधन में श्री ए.एस. किरण कुमार ने भारत के अंतरिक्ष कार्यक्रम की

उपलब्धियों एवं चुनौतियों के बारे में जानकारी दी। उन्होंने अंतरिक्ष यात्रा के प्रारंभिक वर्षों से लेकर अभी हाल ही में 15 फरवरी, 2017 को छोड़े गए पीएसएलवी सी 37 (PSLV C 37) द्वारा 102 छोटे लघु उपग्रहों के साथ ले जाये गये कार्टोसेट-2 संबंधी पूरी जानकारी दी। उन्होंने बताया कि अंतरिक्ष मिशन के लिए सही आंकलन की आवश्यकता होती है एवं कैसे स्वदेशी विकास की मदद से भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रम ने विशाल एवं ऊंचे लक्ष्य प्राप्त किए हैं। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रम में उद्योगों की हिस्सेदारी भी महत्वपूर्ण है, साथ ही अंतरिक्ष विभाग द्वारा विकसित की गई विविध प्रौद्योगिकियों के बारे में भी पॉवर-प्वाइंट प्रस्तुतीकरण के माध्यम से जानकारी दी। श्री किरण कुमार ने आरआरकेट की विविध प्रयोगशालाओं का भ्रमण करते हुए वैज्ञानिकों एवं इंजीनियरों के साथ चर्चा भी की। इसके बाद एक विशेष सत्र केवल शोधार्थियों एवं विद्यार्थियों के लिए रखा गया, जिसमें बड़ी संख्या में युवाओं ने उत्साह से भाग लिया।